तीन यारों की गजब यारी... कालेज, नौकरी साथ-साथ, अब आइटी में बादशाहत

नईदुनिया
नाम ही काफी है

नाम ही काफी है में आज साइबर इंफ्रास्ट्रक्चर प्राइवेट लिमिटेड के संस्थापक दोस्तों कुलदीप कुंडल, अमित अग्रवाल, अभिषेक परिक की कहानी

कहते हैं कि इस दुनिया में सबसे खूबसूरत रिश्ता दोस्ती का होता है क्योंकि इस रिश्ते को हम खुद चुनते हैं। युवाओं में यह बातें आम हैं कि भाई साथ पढ़ेंगे, साथ रहेंगे, साथ नौकरी करेंगे या फिर साथ बिजनेस करेंगे। परंतु कल्पना और योजनाओं से परे हकीकत में ऐसा बहुत कम हो पाता है। मगर कुछ लोग होते हैं, जो ऐसे विरले काम करने के लिए ही होते हैं। कुछ ऐसे ही हैं इंदौर के तीन यार-दोस्त, जिन्होंने साथ में इंजीनियरिंग की, फिर साथ-साथ ही दिल्ली में नौकरी की और जब नौकरी से मन भर गया तो इसके बाद फिर आइटी कंपनी भी साथ ही खोली।

आज ये तीनों सफलता के शीर्ष पर हैं और सैकड़ों युवाओं को उनके जीवन के सपने सच करने में सहायता कर रहे हैं। आज 'नाम ही काफी है' स्तंभ में शहर की कंपनी साइबर इंफ्रास्ट्रक्चर प्राइवेट लिमिटेड के इन्हीं तीन संस्थापक दोस्तों कुलदीप कुंडल, अमित अग्रवाल और अभिषेक परिक की दिलचस्प कहानी। वर्तमान में इनकी कंपनी का टर्नओवर 50 करोड़ रुपये से अधिक है और इनके साथ 1000 से ज्यादा कर्मचारी कार्यरत हैं। इंदौर के अलावा अमेरिका और यूरोप में भी इनके कई कार्यालय हैं।

बाएं से दाएं अमित अग्रवाल, कुलदीप कुंडल, अभिषेक परिक।

दोस्ती और सफलता की यह अद्भुत कहानी शुरू होती है वर्ष 2002 से। तीनों ने इस साल बीटेक पासआउट किया। उम्र का जोश था, तो बिजनेस का ख्याल तो आना ही था। परंतु हर युवा की तरह ये तब जवानी की हवा में नहीं बहे। इन्होंने योजनाबद्ध तरीके से धीरे-धीरे अपनी योजना को साकार किया। तीनों ने उस दौर में महसूस किया कि बड़ी कंपनियों को आइटी सर्विस देने के लिए कई आइटी कंपनियां तैयार थीं, परंतु छोटी कंपनियों को सर्विस नहीं मिल पाती थी। तब इन्होंने स्माल टू मीडियम कंपनी की योजना बनाई। इसके लिए शुरू करनी थी इन्हें अपनी एक कंपनी। समझदारी का परिचय देते हुए इन्होंने पहले नौकरी करने की सोची, ताकि इस क्षेत्र की बारीकियों को समझ सकें और मालिक बनने से पहले एक कर्मचारी के जीवन का भी अहसास कर सकें। इसके लिए तीनों से एक साथ करीब डेढ़ साल तक दिल्ली स्थित एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में नौकरी करते हुए अनुभव लिया। जब इन्होंने स्वयं को तैयार कर लिया, तब ये इंदौर लौटे और नवंबर 2003 में अपनी कंपनी शुरू की। कुछ संघर्ष के बाद कंपनी का श्रीगणेश ही इतना मंगल हुआ कि अमेरिका से 2000 डालर का पहला प्रोजेक्ट मिला। इसके बाद प्रोजेक्ट बढ़ने से इनकी टीम बेहतर होती गई। आज इनकी कंपनी में 1000 से ज्यादा साथी कर्मचारी हैं। संस्थापक अमित अग्रवाल बताते हैं- कंपनी के नाम साइबर इंफ्रास्ट्रक्चर के पीछे कहानी यह है कि कंप्यूटर से जुड़ी हर चीज को साइबर इंफ्रास्ट्रक्चर कहते हैं। क्लाइंट को कंप्यूटर से जुड़ी हर सर्विस मिल सके, हमेशा से हमारा यही प्रयास था, इसलिए कंपनी का भी यही नाम रखा।

उद्यमी बनना है तो पहले बारीकियां जानें -आज के युवाओं को सलाह देते हुए कुलदीप, अमित और अभिषेक बताते हैं कि युवा जिस सेक्टर के उद्यमी बनना चाहते हैं, पहले उस सेक्टर की बारीकियां जानने के लिए उसमें कुछ समय तक नौकरी अवश्य करें। ऐसा करने से टेबल के दोनों तरफ की चीजें समझ में आएंगी।

मंदी के दौर में छोड़ी नौकरी, सही साबित हुआ निर्णय

कुलदीप, अभिषेक और अमित की इस कंपनी के बारे में अमित बताते हैं- वर्ष 2002 से 2003 तक आइटी में मंदी का दौर था। तब प्रोफेशनल्स को आइटी में नौकरी मिलना मुश्किल हो रहा था, किंतु हमने तभी अपने सपने को सच करने के लिए नौकरी छोड़ दी। हम तीनों के घर वाले तब काफी नाराज हुए थे, लेकिन हमने अपने-अपने घरों से एक साल का समय मांगा था। अपने परिवारजनों को विश्वास दिलाया था कि अगर एक साल में हम कुछ नहीं कर पाए, तो जो आप कहेंगे, फिर हम वही कर लेंगे। हालांकि इस शर्त की कभी जरूरत नहीं पड़ी। कंपनी शुरू की और हमेशा आगे ही आगे देखा। वर्ष 2003 के बाद आइटी सेक्टर ने काफी बूस्ट किया और हमारा आइटी कंपनी खोलने का निर्णय सही साबित हुआ।

बिजनेस से ही सीखा बिजनेस करना

तीनों दोस्त बताते हैं कि हम तीनों का कोई बिजनेस बैकग्राउंड नहीं था। सभी के पिता नौकरी में थे। किंतु हमने बिजनेस ही सीखा। शुरुआत से ही विदेश के प्रोजेक्ट मिलने से हमें बड़े स्केल पर काफी कुछ सीखने को मिला। सीखते-सीखते कब बिजनेस अच्छा चलने लगा, पता ही नहीं चला। दरअसल, हम तीनों का मानना है कि मेहनत का जुनून हो तो हर मुश्किल आसान लगती है। इसके अलावा शुरुआत से हमें टीम भी अच्छी मिलती चली गई।

प्रोजेक्ट रद्द हुए पर कर्मचारियों के साथ खड़े रहे

आइटी क्षेत्र में बड़े प्रोजेक्ट आते ही कंपनियां नए कर्मचारियों को नौकरी पर रखना शुरू कर देती हैं और प्रोजेक्ट खत्म होने के बाद मंदी की बात कहकर उन्हें निकाल देती हैं। किंतु इन तीन दोस्तों ने ऐसा नहीं किया। अमित ने बताया कि हमने हमेशा उतने ही प्रोजेक्ट लिए, जितनी हमारी मैनपावर थी। कई बार हमें आफर हुआ कि कुछ समय के लिए कर्मचारी बढ़ा लीजिए, लेकिन हमने ऐसा नहीं किया। आखिर अपना काम होने के बाद हम किसी के सपनों के पंख कैसे कतर सकते हैं? यह हमें नागवार गुजरता, इसलिए हमने ऐसा नहीं किया। हमारे इस रवैये को पसंद करके कई क्लाइंट ने कुछ महीनों बाद फिर हमें ही प्रोजेक्ट दिए।